



B C RIKHTA

29 Jun 1954

04:00 AM

Jubbal

Model: Web-MyKundli

Order No: 121243001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 28-29/06/1954
दिन _____: सोम-मंगलवार
जन्म समय _____: 04:00:00 घंटे
इष्ट _____: 56:45:14 घटी
स्थान _____: Jubbal
राज्य _____: Himachal Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 31:05:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:40:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:19:20 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 03:40:40 घंटे
वेलान्तर _____: -00:02:59 घंटे
साम्पातिक काल _____: 22:06:34 घंटे
सूर्योदय _____: 05:17:54 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:26:52 घंटे
दिनमान _____: 14:08:58 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 13:26:09 मिथुन
लग्न के अंश _____: 24:13:41 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृष - शुक्र
राशि-स्वामी _____: वृष - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: रोहिणी - 4
नक्षत्र स्वामी _____: चन्द्र
योग _____: गण्ड
करण _____: विष्टि
गण _____: मनुष्य
योनि _____: सर्प
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: वू-वुभेश
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कर्क

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1876	आषाढ़	8
पंजाबी	संवत : 2011	आषाढ़	16
बंगाली	सन् : 1361	आषाढ़	14
तमिल	संवत : 2011	आनी	15
केरल	कोल्लम : 1129	मिथुनम	15
नेपाली	संवत : 2011	आषाढ़	15
चैत्रादि	संवत : 2011	आषाढ़	कृष्ण 14
कार्तिकादि	संवत : 2011	ज्येष्ठ	कृष्ण 14

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 13
तिथि समाप्ति काल _____ : 22:46:51
जन्म तिथि _____ : 14
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : कृतिका
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 07:30:49 घंटे
जन्म योग _____ : रोहिणी
सूर्योदय कालीन योग _____ : शूल
योग समाप्ति काल _____ : 18:57:40 घंटे
जन्म योग _____ : गण्ड
सूर्योदय कालीन करण _____ : गर
करण समाप्ति काल _____ : 12:08:56 घंटे
जन्म करण _____ : विष्टि
भयात _____ : 51:12:57
भभोग _____ : 55:12:42
भोग्य दशा काल _____ : चंद्र 0 वर्ष 8 मा 19 दि

घात चक्र

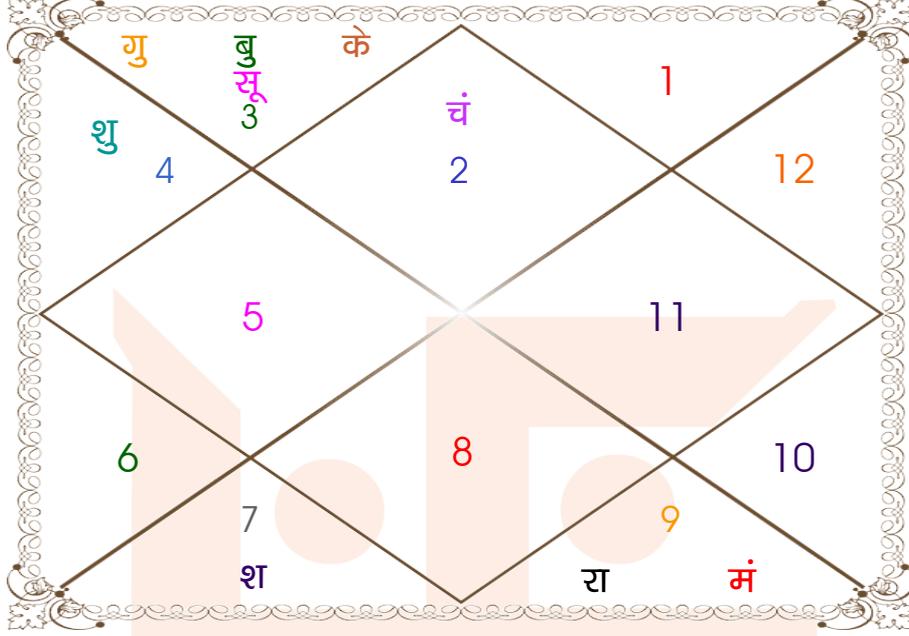
मास _____ : मार्गशीर्ष
तिथि _____ : 5-10-15
दिन _____ : शनिवार
नक्षत्र _____ : हस्त
योग _____ : शुक्ल
करण _____ : शकुनि
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : वृष
सूर्य _____ : वृश्चिक
चन्द्र _____ : कन्या
मंगल _____ : धनु
बुध _____ : कन्या
गुरु _____ : मकर
शुक्र _____ : मकर
शनि _____ : तुला
राहु _____ : मकर

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

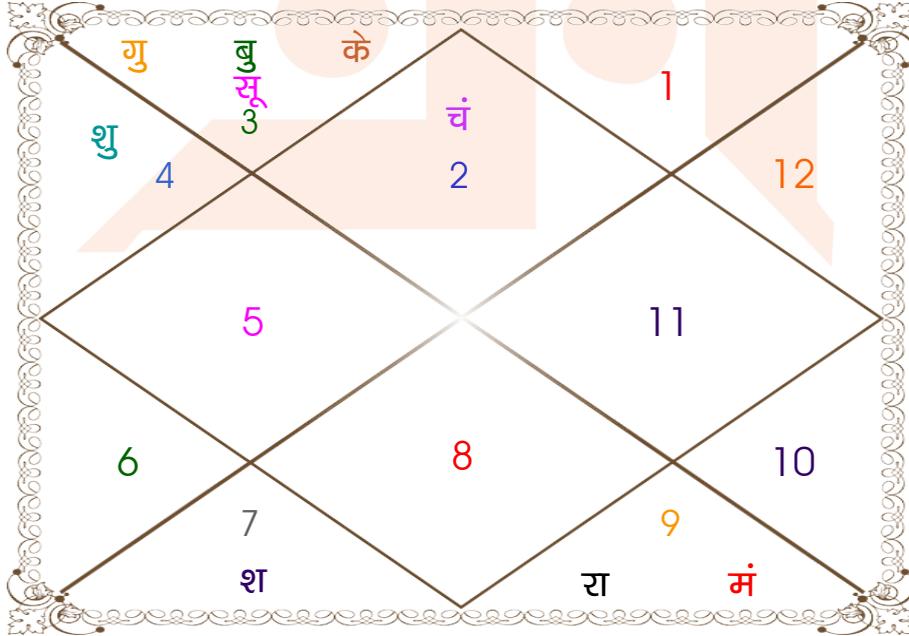
JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI

TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206

Mob-9418272812

deepanshusharma239139@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

		चं ल	गु सू क
			शु
रा मं		श	

लग्न कुंडली

के गु सू	चं ल		
	सू		
	शु		
		श	मं रा

विंशोत्तरी
चन्द्र 0वर्ष 8मा 19दि
चन्द्र

29/06/1954

18/03/2065

चन्द्र	19/03/1955
मंगल	19/03/1962
राहु	18/03/1980
गुरु	18/03/1996
शनि	19/03/2015
बुध	18/03/2032
केतु	19/03/2039
शुक्र	19/03/2059
सूर्य	18/03/2065

योगिनी
सिद्धा 0वर्ष 6मा 1दि
सिद्धा

30/12/2019

30/12/2026

सिद्धा	10/05/2021
संकटा	30/11/2022
मंगला	09/02/2023
पिंगला	01/07/2023
धान्या	30/01/2024
भामरी	09/11/2024
भद्रिका	30/10/2025
उल्का	30/12/2026

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206

Mob-9418272812

deepanshusharma239139@gmail.com

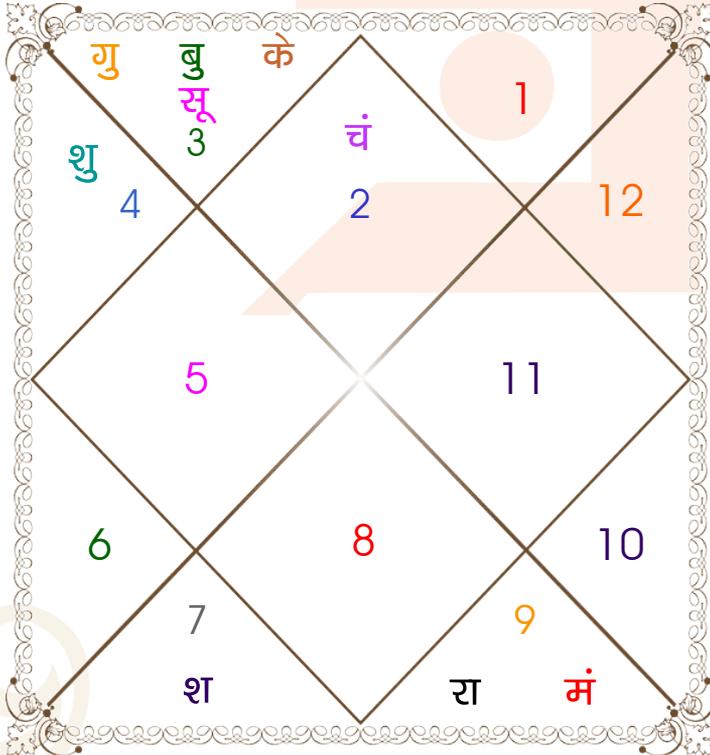
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	24:13:41	356:26:17	मृगशिरा	1	5	शुक्र	मंगल	राहु	---
सूर्य			मिथु	13:26:09	00:57:14	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	बुध	सम राशि
चंद्र			वृष	22:22:20	14:26:26	रोहिणी	4	4	शुक्र	चंद्र	शुक्र	मूलत्रिकोण
मंगल	व		धनु	08:06:17	00:18:37	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	मित्र राशि
बुध	व	अ	मिथु	24:22:11	00:24:23	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	बुध	स्वराशि
गुरु		अ	मिथु	14:44:32	00:13:38	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	केतु	शत्रु राशि
शुक्र			कर्क	20:00:13	01:10:20	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	शत्रु राशि
शनि	व		तुला	09:27:57	00:00:46	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	गुरु	उच्च राशि
राहु	व		धनु	21:31:23	00:00:57	पूर्वाषाढा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	नीच राशि
केतु	व		मिथु	21:31:23	00:00:57	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	गुरु	नीच राशि
हर्ष			मिथु	29:04:25	00:03:33	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	सूर्य	---
नेप	व		तुला	00:04:14	00:00:12	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	बुध	---
प्लूटो			कर्क	29:59:40	00:01:24	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	शनि	---
दशम भाव			कुंभ	06:18:27	--	धनिष्ठा	--	23	शनि	मंगल	चंद्र	--

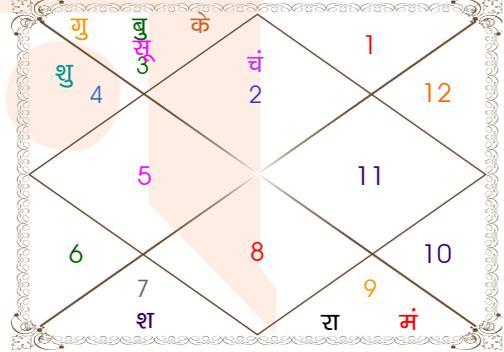
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:13:34

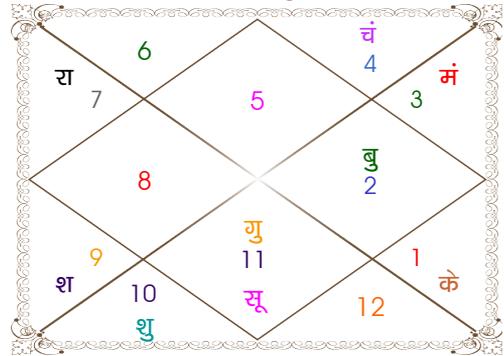
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृष 06:14:29	वृष 24:13:41
2	मिथुन 06:14:29	मिथुन 18:15:16
3	कर्क 00:16:04	कर्क 12:16:51
4	कर्क 24:17:39	सिंह 06:18:27
5	सिंह 24:17:39	कन्या 12:16:51
6	तुला 00:16:04	तुला 18:15:16
7	वृश्चिक 06:14:29	वृश्चिक 24:13:41
8	धनु 06:14:29	धनु 18:15:16
9	मकर 00:16:04	मकर 12:16:51
10	मकर 24:17:39	कुम्भ 06:18:27
11	कुम्भ 24:17:39	मीन 12:16:51
12	मेष 00:16:04	मेष 18:15:16

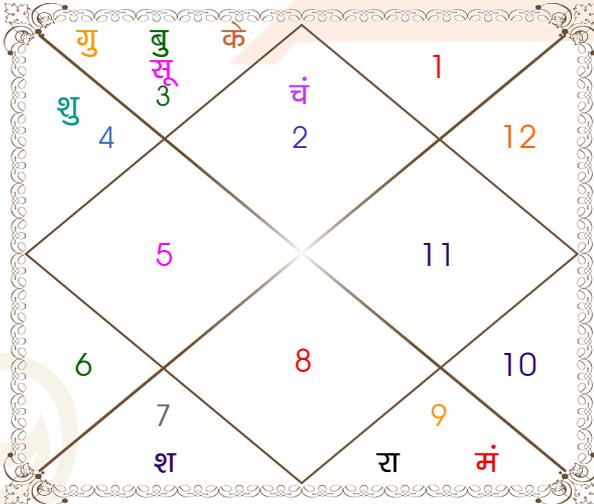
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	24:13:41
2	मिथुन	17:23:06
3	कर्क	10:11:49
4	सिंह	06:18:27
5	कन्या	08:44:17
6	तुला	16:58:48
7	वृश्चिक	24:13:41
8	धनु	17:23:06
9	मकर	10:11:49
10	कुम्भ	06:18:27
11	मीन	08:44:17
12	मेष	16:58:48

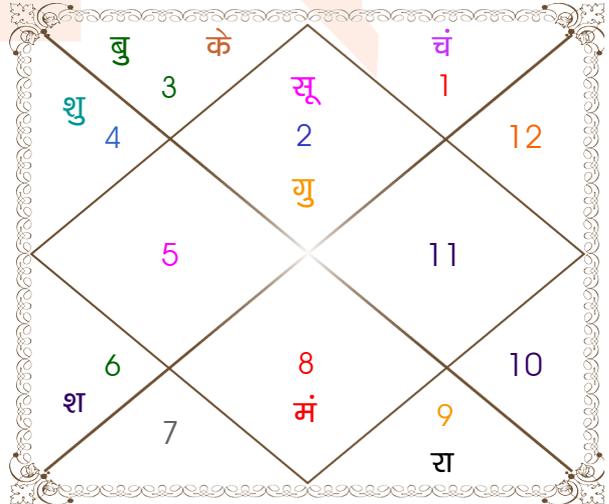
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली



भाव कुंडली



SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 0 वर्ष 8 मास 19 दिन

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
29/06/1954	19/03/1955	19/03/1962	18/03/1980	18/03/1996
19/03/1955	19/03/1962	18/03/1980	18/03/1996	19/03/2015
00/00/0000	मंगल 15/08/1955	राहु 29/11/1964	गुरु 06/05/1982	शनि 22/03/1999
00/00/0000	राहु 02/09/1956	गुरु 25/04/1967	शनि 17/11/1984	बुध 29/11/2001
00/00/0000	गुरु 09/08/1957	शनि 28/02/1970	बुध 23/02/1987	केतु 08/01/2003
00/00/0000	शनि 17/09/1958	बुध 17/09/1972	केतु 30/01/1988	शुक्र 10/03/2006
00/00/0000	बुध 15/09/1959	केतु 05/10/1973	शुक्र 30/09/1990	सूर्य 20/02/2007
00/00/0000	केतु 11/02/1960	शुक्र 05/10/1976	सूर्य 19/07/1991	चंद्र 20/09/2008
29/06/1954	शुक्र 12/04/1961	सूर्य 30/08/1977	चंद्र 17/11/1992	मंगल 30/10/2009
शुक्र 17/09/1954	सूर्य 18/08/1961	चंद्र 01/03/1979	मंगल 24/10/1993	राहु 05/09/2012
सूर्य 19/03/1955	चंद्र 19/03/1962	मंगल 18/03/1980	राहु 18/03/1996	गुरु 19/03/2015

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
19/03/2015	18/03/2032	19/03/2039	19/03/2059	18/03/2065
18/03/2032	19/03/2039	19/03/2059	18/03/2065	00/00/0000
बुध 15/08/2017	केतु 14/08/2032	शुक्र 18/07/2042	सूर्य 07/07/2059	चंद्र 17/01/2066
केतु 12/08/2018	शुक्र 15/10/2033	सूर्य 19/07/2043	चंद्र 05/01/2060	मंगल 18/08/2066
शुक्र 12/06/2021	सूर्य 19/02/2034	चंद्र 18/03/2045	मंगल 12/05/2060	राहु 17/02/2068
सूर्य 18/04/2022	चंद्र 20/09/2034	मंगल 19/05/2046	राहु 06/04/2061	गुरु 18/06/2069
चंद्र 18/09/2023	मंगल 17/02/2035	राहु 18/05/2049	गुरु 23/01/2062	शनि 17/01/2071
मंगल 14/09/2024	राहु 06/03/2036	गुरु 17/01/2052	शनि 05/01/2063	बुध 18/06/2072
राहु 03/04/2027	गुरु 10/02/2037	शनि 19/03/2055	बुध 11/11/2063	केतु 17/01/2073
गुरु 09/07/2029	शनि 22/03/2038	बुध 17/01/2058	केतु 18/03/2064	शुक्र 29/06/2074
शनि 18/03/2032	बुध 19/03/2039	केतु 19/03/2059	शुक्र 18/03/2065	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 0 वर्ष 8 मा 21 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - राहु	बुध - गुरु	बुध - शनि	केतु - केतु	केतु - शुक्र
14/09/2024	03/04/2027	09/07/2029	18/03/2032	14/08/2032
03/04/2027	09/07/2029	18/03/2032	14/08/2032	15/10/2033
राहु 01/02/2025	गुरु 23/07/2027	शनि 12/12/2029	केतु 27/03/2032	शुक्र 24/10/2032
गुरु 05/06/2025	शनि 01/12/2027	बुध 30/04/2030	शुक्र 21/04/2032	सूर्य 15/11/2032
शनि 30/10/2025	बुध 27/03/2028	केतु 26/06/2030	सूर्य 28/04/2032	चंद्र 20/12/2032
बुध 11/03/2026	केतु 14/05/2028	शुक्र 07/12/2030	चंद्र 11/05/2032	मंगल 14/01/2033
केतु 04/05/2026	शुक्र 29/09/2028	सूर्य 25/01/2031	मंगल 19/05/2032	राहु 19/03/2033
शुक्र 07/10/2026	सूर्य 10/11/2028	चंद्र 17/04/2031	राहु 11/06/2032	गुरु 15/05/2033
सूर्य 22/11/2026	चंद्र 18/01/2029	मंगल 14/06/2031	गुरु 01/07/2032	शनि 21/07/2033
चंद्र 08/02/2027	मंगल 07/03/2029	राहु 08/11/2031	शनि 24/07/2032	बुध 20/09/2033
मंगल 03/04/2027	राहु 09/07/2029	गुरु 18/03/2032	बुध 14/08/2032	केतु 15/10/2033

केतु - सूर्य	केतु - चंद्र	केतु - मंगल	केतु - राहु	केतु - गुरु
15/10/2033	19/02/2034	20/09/2034	17/02/2035	06/03/2036
19/02/2034	20/09/2034	17/02/2035	06/03/2036	10/02/2037
सूर्य 21/10/2033	चंद्र 09/03/2034	मंगल 29/09/2034	राहु 15/04/2035	गुरु 21/04/2036
चंद्र 01/11/2033	मंगल 22/03/2034	राहु 21/10/2034	गुरु 05/06/2035	शनि 13/06/2036
मंगल 08/11/2033	राहु 22/04/2034	गुरु 10/11/2034	शनि 05/08/2035	बुध 01/08/2036
राहु 27/11/2033	गुरु 21/05/2034	शनि 04/12/2034	बुध 28/09/2035	केतु 21/08/2036
गुरु 14/12/2033	शनि 24/06/2034	बुध 25/12/2034	केतु 21/10/2035	शुक्र 16/10/2036
शनि 03/01/2034	बुध 24/07/2034	केतु 03/01/2035	शुक्र 24/12/2035	सूर्य 03/11/2036
बुध 22/01/2034	केतु 05/08/2034	शुक्र 28/01/2035	सूर्य 12/01/2036	चंद्र 01/12/2036
केतु 29/01/2034	शुक्र 10/09/2034	सूर्य 04/02/2035	चंद्र 13/02/2036	मंगल 21/12/2036
शुक्र 19/02/2034	सूर्य 20/09/2034	चंद्र 17/02/2035	मंगल 06/03/2036	राहु 10/02/2037

केतु - शनि	केतु - बुध	शुक्र - शुक्र	शुक्र - सूर्य	शुक्र - चंद्र
10/02/2037	22/03/2038	19/03/2039	18/07/2042	19/07/2043
22/03/2038	19/03/2039	18/07/2042	19/07/2043	18/03/2045
शनि 15/04/2037	बुध 12/05/2038	शुक्र 08/10/2039	सूर्य 06/08/2042	चंद्र 07/09/2043
बुध 11/06/2037	केतु 02/06/2038	सूर्य 08/12/2039	चंद्र 05/09/2042	मंगल 13/10/2043
केतु 05/07/2037	शुक्र 02/08/2038	चंद्र 18/03/2040	मंगल 26/09/2042	राहु 12/01/2044
शुक्र 10/09/2037	सूर्य 20/08/2038	मंगल 28/05/2040	राहु 20/11/2042	गुरु 02/04/2044
सूर्य 01/10/2037	चंद्र 19/09/2038	राहु 27/11/2040	गुरु 08/01/2043	शनि 08/07/2044
चंद्र 03/11/2037	मंगल 10/10/2038	गुरु 08/05/2041	शनि 07/03/2043	बुध 02/10/2044
मंगल 27/11/2037	राहु 03/12/2038	शनि 17/11/2041	बुध 28/04/2043	केतु 07/11/2044
राहु 27/01/2038	गुरु 21/01/2039	बुध 08/05/2042	केतु 19/05/2043	शुक्र 16/02/2045
गुरु 22/03/2038	शनि 19/03/2039	केतु 18/07/2042	शुक्र 19/07/2043	सूर्य 18/03/2045

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	9
मित्र अंक	2, 7, 8, 9
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

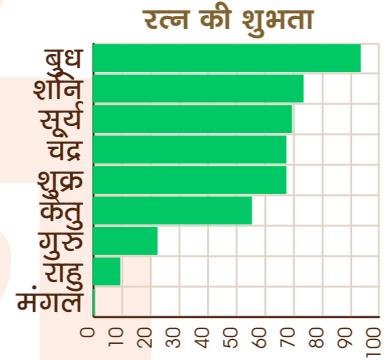
JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	93%	धन, सन्तति सुख
नीलम	शनि	73%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
माणिक्य	सूर्य	69%	धन, सुख
मोती	चंद्र	67%	स्वास्थ्य, पराक्रम
हीरा	शुक्र	67%	पराक्रम, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
लहसुनिया	केतु	55%	धन
पुखराज	गुरु	22%	धन हानि, दुर्घटना, हानि
गोमेद	राहु	9%	दुर्घटना, धन हानि
मूंगा	मंगल	0%	दुर्घटना, व्यय, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	19/03/1955	75%	80%	0%	100%	22%	67%	73%	0%	34%
मंगल	19/03/1962	75%	74%	0%	81%	34%	67%	73%	0%	61%
राहु	18/03/1980	56%	55%	0%	93%	22%	73%	80%	34%	34%
गुरु	18/03/1996	75%	74%	0%	81%	47%	55%	73%	9%	55%
शनि	19/03/2015	56%	55%	0%	100%	22%	73%	86%	22%	34%
बुध	18/03/2032	75%	55%	0%	100%	22%	73%	73%	9%	55%
केतु	19/03/2039	56%	55%	0%	93%	22%	73%	61%	0%	67%
शुक्र	19/03/2059	56%	55%	0%	100%	22%	80%	80%	22%	61%
सूर्य	18/03/2065	81%	74%	0%	93%	34%	55%	61%	0%	34%

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/02/1958-02/06/1958 07/11/1958-02/02/1961 17/09/1961-08/10/1961
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	17/06/1968-17/06/1968 07/03/1969-28/04/1971 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	28/04/1971-10/06/1973 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	10/06/1973-23/07/1975 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/09/1977-04/11/1979 15/03/1980-27/07/1980 -----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/12/1987-21/03/1990 20/06/1990-15/12/1990 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	17/04/1998-07/06/2000 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009 -----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

अशुभ
अशुभ
शुभ
सम
अशुभ

क्षेत्र

दुर्घटना से बचाव
व्यय
स्वास्थ्य
धन
सुख हानि

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी कुंडली में जन्म के समय मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जनित एवं रक्त विकार से आप यदा कदा कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं उनके स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा जिससे यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा तथा इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव भी नहीं होगा। साथ ही समय समय पर आपके सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। इसके प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व किसी वार्ता में बाधा भी आ सकती है परन्तु अन्त में आपको सफलता प्राप्त होगी तथा सामान्यतया सुख पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा।

आपकी कुंडली में मंगल अष्टम भाव में है अतः आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा गर्मी आदि से आपको किंचित परेशानी की अनुभूति हो सकती है। सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में भी आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आय स्रोतों में वृद्धि होगी। आवश्यक मात्रा में लाभार्जन भी होता रहेगा परन्तु इस में आपको अधिक परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे। साथ ही वाणी में ओजस्विता का भाव भी रहेगा परन्तु धनार्जन अच्छा रहेगा तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा। पराक्रम में वृद्धि होगी जिससे आप अपने उन्नति मार्ग को प्रशस्त करने में समर्थ रहेंगे।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको ऐसी

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु की स्थिति होनी चाहिए। इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा ऐश्वर्य आदि से आप सुसम्पन्न होकर आनन्दपूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे। साथ ही परस्पर संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में कर्कोटक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक का पैतृक धन सम्पत्ति आंशिक रूप में नुकसान होता है। भाग्य उदय होने में थोड़ी बहुत रुकावट आती है परन्तु कालान्तर में वह व्यवधान स्वतः हट जाता है। व्यापार कार्य में विशेष रूप से परिश्रम करने पर लाभ मिलता है। नौकरी में थोड़ा बहुत व्यवधान उपस्थित होता है और यदि नौकरी मिल जाती है तो पदावनति होने का भय रहता है।

इस योग के प्रभाव से जातक को अपनी वाणी पर नियन्त्रण नहीं रहता और दूषित भी हो जाता है। जातक बात-बात पर लड़ाई झगड़े करने को तैयार हो जाता है। जातक को परिश्रम करने के बावजूद भी सही फल प्राप्त नहीं होता है। उधार में दिया हुआ द्रव्य प्रायः वापस नहीं आता है और जातक थोड़ा बहुत चिड़चिड़ा हो जाता है एवं कभी-कभी झंझट करने को भी तैयार हो जाता है तथा मानसिक परेशानी घेरे रहती है। कभी रोग व्याधि शरीर में लग जाती है और जातक को दुर्घटना का भय बना रहता है। आय की अपेक्षा व्यय अधिक होने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। परन्तु विशेष परिश्रम करने पर आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है।

इस योग के प्रभाव से जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं, पर अपने कार्य में वे प्रायः सफल नहीं होते। जातक को अपने कुटुम्बियों से अपयश मिलता है एवं आत्मीय जन भी सम्मान नहीं देते हैं। अपने मित्रगणों के द्वारा छले जाते हैं। जिस कारण जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 'ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अद्वारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड़्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में बुध के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI

TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206

Mob-9418272812

deepanshusharma239139@gmail.com

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI

TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206

Mob-9418272812

deepanshusharma239139@gmail.com

ग्रह फल

सूर्य

द्वितीय भाव में सूर्य हो तो जातक भाग्यवान्, सम्पत्तिवान्, मुखरोगी, झगड़ालू, नेत्रकर्णदन्तरोगी, राजभीरु, घरेलू जीवन दुःखी एवं स्त्री के लिए कुटुम्बियों से झगड़ने वाला होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प मात्रा में शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति होती रहेगी। आपके प्रति उनका प्रेम भाव रहेगा तथा विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही वे समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप भी उनका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। उनकी आज्ञा का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेद होने से विवाद आदि की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय पश्चात सब कुछ ही ठीक हो जाएगा।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, सुखी, कुशा बुद्धिवाला, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, परलिंगी के प्रति आकर्षण, खाने-पीने का शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

मंगल

आठवेंभाव में मंगल हो तो जातक व्याधिस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्ररोगी, शस्त्रचोर, संकोची, अग्निभीरु, धनचिन्ता युक्त एवं रक्तविकारयुक्त होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, कूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं यथाशक्ति जीवन में आपको अपना सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे। साथ ही यदा कदा आप उनसे विशेष रूप से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपका साथ देंगे तथा अपनी ओर से कोई भी कष्ट नहीं होने देंगे।

आप भी उनको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सहायता करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह तनाव अस्थायी रहेगा एवं शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। जीवन में आप सभी विषम परिस्थितियों में सर्वदा उनकी अपनी ओर से वांछित सहायता प्रदान करते रहेंगे।

बुध

द्वितीयभाव में बुध हो तो जातक सुखी, सुन्दर, वक्ता, साहसी, सत्कार्यकारक, संधी, दलाल या वकील का पेशा करने वाला, मिष्टाभभोजी, गुणी एवं मितव्ययी होता है।

मिथुन राशि में बुध हो तो जातक मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ, वक्ता, लेखक, अल्पसन्ततिवाला, विवेकी, सदाचारी, खोज के काम में चतुर, दीर्घायु, यात्रा का शौकीन, संगीत में रुचि एवं हास परिहास करने वाला होता है।

गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान्, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

शुक्र

तृतीय भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कलाकार, आलसी, कृपण, धनी, सुखी, पराकमी, भाग्यवान्, बहने भाईयों से अधिक एवं पर्यटनशील होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

षष्ठभाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, व्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

दशा विश्लेषण

**महादशा :- बुध
(19/03/2015 - 18/03/2032)**

बुध की महादशा 19/03/2015 आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 18/03/2032 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध द्वितीय भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि अष्टम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। उस दशा के दौरान आपको समृद्धि की प्राप्ति, जीवन-वृत्ति में उन्नति तथा यात्रा हुई होगी। बुध की इस दशा के दौरान आपको धन-समृद्धि, परिवार के सुख, यश तथा ख्याति की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय, स्फूर्तिवान तथा उत्साह से भरे रहेंगे। संक्रामक बीमारी, ज्वर, गले की समस्या, ब्रोंकाइटिस, स्नायविक समस्या, गठिया आदि मौसमी बीमारियों को छोड़कर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अपने स्वास्थ्य के रखरखाव के लिये आपको अधिक मानसिक तथा शारिरिक श्रम से बचना चाहिए।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। आपका धन-संग्रह होगा। अष्टम भाव पर बुध की दृष्टि के कारण आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति भी होगी। आपको सट्टे तथा निवेश में लाभ मिलेगा। अर्थिक दृष्टि से यह दशा अति उत्तम होगी। जीविका के लिये लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, वैमानिकी, अन्तरिक्ष अनुसन्धान अन्य सभी बौद्धिक कार्य का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर एवं हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की आय में वृद्धि, पदोन्नति तथा यात्रा होगी। आपको आपके उच्चाधिकारियों का सदभाव प्राप्त होगा और आप अपनी सामर्थ्य के कारण पहचाने जायेंगे। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों के व्यापार में शुभ परिवर्तन होगा। आपकी आय तथा लाभ अच्छा होगा। आपके कार्य-क्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है। आर्थिक और जीवन-वृत्ति की दृष्टि से यह दशा अति उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन का सुख मिलेगा। आप नया वाहन प्राप्त कर सकते हैं। आपको जीवन का सारा सुख मिलेगा। आपको माता से लाभ मिलेगा। इस दशा के दौरान भवन की प्राप्ति होगी। सम्पत्ति का लेन-देन बहुत लाभदायक होगा और जमीन-जायदाद से लाभ मिलेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान आपकी छोटी तथा मंगल की अन्तर्दशा के दौरान लम्बी यात्राएं होंगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आपकी शैक्षिक वृत्ति नयी ऊँचाइयों को छूएगी। आप परीक्षाओं तथा प्रतियोगिताओं में सफल होंगे, जिससे लोगों के बीच जाने जाएंगे। गणित, लेखा, वाणिज्य, विज्ञान तथा साहित्य में आपकी रुची होगी। आप ललितकला

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

तथा उन सभी कार्यों में कुशल होंगे जिनके कारण मनुष्य बुद्धिमान और बहुमुखी होता है और विभिन्न विषयों में उसकी रुचि होती है। आपमें भाषण-क्षमता विद्यमान है।

परिवार :

आपको आपके बच्चों से अपार सुख मिलेगा या आपके परिवार में किसी शिशु का जन्म हो सकता है। आपके जीवन साथी के कार्य-क्षेत्र में शुभ परिवर्तन हो सकता है। उन्हें अचानक धन-लाभ मिलेगा तथा सम्पत्ति में वृद्धि होगी और स्वास्थ्य उत्तम होगा। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता को लाभ होगा, उनकी मनोकामनाएं पूरी होंगी तथा उनके अच्छे मित्र होंगे जबकि आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, विरोधियों पर विजय मिलेगी और शासन से लाभ मिलेगा। आपके छोटे भाई-बहनों का दान-पुण्य आदि शुभ कार्यों पर व्यय होगा, उनकी आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी और सफलता मिलेगी। आपके बड़े भाई-बहनों को सुख और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी, उनका माता के साथ सम्बन्ध अच्छा रहेगा और उनके मित्र होंगे। आपके अनेक मित्र होंगे, पारिवारिक सुख मिलेगा और रत्नों तथा अच्छे कपड़ों की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी शिक्षा उत्तम होगी, पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आगे केतु की अन्तर्दशा कुछ मानसिक तनाव दे सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप यश, ख्याति और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। सूर्य की अन्तर्दशा के कारण सुख तथा समृद्धि में वृद्धि होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा होंगी जबकि मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप यात्रा और व्यय होगा। इसके बाद राहु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न होंगी जबकि गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप समृद्धि, सम्पत्ति, यश और ख्याति की प्राप्ति और जीविका में उन्नति होगी।

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

अंतर्दशा :- बुध - राहु
(14/09/2024 - 03/04/2027)

आपके लिए बुध की महादशा 19/03/2015 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 14/09/2024 को प्रारंभ होकर 03/04/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपको साझेदारों से लाभ होगा। विरासत या वसीयत, उपहार या सेवानिवृत्ति से अचानक धनागम हो सकता है। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। विदेश जा सकते हैं। आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम होगा, मगर मामूली शिकायतों को अनदेखा न करें, क्योंकि वे गंभीर बन सकती हैं। शिक्षा उत्तम होगी। धन का संचय होगा। सुख-सुविधाओं की प्राप्ति की इच्छा पूर्ण होगी।

आपके जीवनसाथी की आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। आपके पिता की यात्राएं होंगी, व्यर्थ के खर्चे हो सकते हैं। माता भाग्यशाली रहेंगी, उन्हें निवेश से लाभ हो सकता है। आपके भाई-बहनों के लिए सम्मान, धन, शत्रुओं पर विजय, प्रसिद्धि और कार्यक्षेत्र में सफलता का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे, घरेलू सुख रहेगा, भूमि से अच्छी आय होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो लक्ष्य की ओर एकाग्रचित्त रहेंगे, उच्चाधिकारियों से लाभ होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों को साझेदारी से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छोटी-मोटी शिकायतों का ठीक से इलाज करवायें। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द, सतनजा और नीले वस्त्र दान में दें।

अंतर्दशा :- बुध - गुरु
(03/04/2027 - 09/07/2029)

आपके लिए बुध की महादशा 19/03/2015 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 03/04/2027 को प्रारंभ होकर 09/07/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। सब सुख उपलब्ध होंगे। उत्तम वस्त्र और भोजन प्राप्त होंगे। शिक्षा उत्तम होगी; धन का संचय होगा। साझेदार के माध्यम से लाभ हो सकता है। विरासत में धन मिल सकता है। स्वास्थ्य उत्तम होगा। अचानक धन और संपत्ति मिल सकते हैं। अध्यात्म और दर्शनशास्त्र में रुचि हो सकती है। अच्छी नौकरी मिल सकती है। सफलता और समृद्धि प्राप्त होंगी। भाग्य साथ देगा, धन का संचय होगा।

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

आपके जीवनसाथी को साझेदारी से लाभ होगा। आपके पिता को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। माता धनी और प्रसन्न होंगी।

आपके भाई-बहनों के लिए शत्रुओं पर विजय, धन का संचय, अध्यात्म में रुचि, घरेलू सुख, उत्तम शिक्षा और उत्तम मित्रों का संकेत है।

आपकी संतान को प्रसिद्धि मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे; माता से लाभ होगा, सफल होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सौभाग्यशाली रहेंगे, आय बढ़ेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है ; अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

अंतर्दशा :- बुध - शनि
(09/07/2029 - 18/03/2032)

आपके लिए बुध की महादशा 19/03/2015 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा शनि की होगी जो आपके लिए 09/07/2029 को प्रारंभ होकर 18/03/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु और धैर्य का कारक है।

इस अवधि में आप शत्रुओं पर विजयी होंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। प्रोन्नति होगी, उच्च पद मिलेगा। कार्यालय में वातावरण मधुर रहेगा; मातहत सहयोग करेंगे। धनागम होगा ; समृद्ध बनेंगे। कार्यक्षेत्र में जिम्मेदारियां बढ़ेंगी, दक्षता उत्तम रहेगी। खुशियां बढ़ेंगी। धनागम होगा, उत्साह से पूर्ण रहेंगे। जीवनसाथी के माध्यम से लाभ हो सकता है; तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। जीवन में कुछ परिवर्तन हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी के जीवन में मामूली परिवर्तन हो सकता है। आपके पिता धनी बनेंगे; भूमि से अच्छी आय हो सकती है। माता प्रसन्न रहेंगी, उत्साह उत्तम होगा। आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम शिक्षा, अचल संपत्ति की प्राप्ति, कुछ परिवर्तन, अचानक लाभ और यात्रा का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो पारिवारिक जीवन उत्तम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, सफलता मिलेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA

JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com